कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान में दिखा दुर्लभ 'माउस डियर'

चर्चा में क्यों?

30 मई, 2023 को छत्तीसगढ़ जनसंपर्क विभाग द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार बस्तर स्थित विख्यात कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान में अब दुर्लभ प्रजाति 'माउस डियर'की तस्वीर कैमरा ट्रेप में कैद हुई है।

प्रमुख बिंदु

- हाल ही में कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान में संकटापन्न जंगली भेड़ियों की वापसी के साथ-साथ इससे लगे गाँवों तक छत्तीसगढ़ की राजकीय पक्षी 'पहाड़ी मैना'की भी मीठी बोली गूंजने लगी है।
- यह वन विभाग की पहल से वन्यजीवों के सुरक्षित रहवास के लिये किये जा रहे कार्यों के सकारात्मक परिणाम को दर्शाता है। कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान प्रबंधन द्वारा लगातार वन्यजीवों के संरक्षण की दिशा में कार्य करने से दुर्लभ प्रजातियों का रहवास सुरक्षित हुआ है।
- कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान के निदेशक धम्मशील गणवीर ने बताया कि राष्ट्रीय उद्यान प्रबंधन द्वारा स्थानीय युवाओं को पेट्रोलिंग गार्ड के रूप में रोज़गार उपलब्ध कराया गया है, जिससे लगातार पेट्रोलिंग और मॉनिटरिंग कर वन्यजीवों के रहवास का संरक्षण किया जा रहा है। साथ ही राष्ट्रीय उद्यान से लगे ग्रामीणों की संरक्षण में सहभागिता सुनिश्चित होने से वन्य प्राणियों की संख्या में बढ़ोतरी देखी जा रही है।
- उल्लेखनीय है कि भारत में पाए जाने वाले हरिणों की 12 प्रजातियों में से माउस डियर विश्व में सबसे छोटे हरिण समूह की प्रजाति में से एक है।
- भारतीय माउस डियर का रहवास विशेष रूप से घने झाड़ियों तथा नमी वाले जंगलों में होता है। माउस डियर में चूहे-सूअर और हरिण के रूप और आकार का मिश्रण दिखाई देता है और बिना सींग वाले हरिण का एकमात्र समूह है।
- माउस डियर के शर्मीले व्यवहार और रात्रिकालीन गतिविधि के कारण इनके विषय में विशेष रिसर्च नहीं हुआ है। मुख्य रूप से दक्षिण एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया के उष्णकटिबंधीय नम पर्णपाती वनों में माउस डियर की उपस्थिति दर्ज हुई है।
- वनों में लगने वाली आग, बढ़ते हुए अतिक्रमण और शिकार के दबाव से भारतीय माउस डियर की आबादी को शायद गंभीर खतरे का सामना करना पड़ रहा है। वर्तमान में इन प्रजातियों को बचाने के प्रयास की आवश्यकता है।
- कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान में ऐसे वन्यजीव के लिये उपयुक्त रहवास होने से और राष्ट्रीय उद्यान प्रबंधन द्वारा वन्य जीवों के संरक्षण हेतु लगातार चलाए जा रहे जागरूकता अभियान और स्थानीय लोगों की सहभागिता के परिणामस्वरूप 'माउस डियर'जैसे दुर्लभ प्रजातियों की वापसी देखे जाने से राज्य शासन की वन्यजीव संरक्षण का उद्देश्य साकार हो रहा है। इससे पर्यटक आकर्षित होंगे तथा राष्ट्रीय उद्यान में सैलानियों की संख्या और अधिक बढ़ेगी।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/rare-mouse-deer-seen-in-kanger-ghati-national-park